Peer Reviewed Referred and UGC
Listed Journal (Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

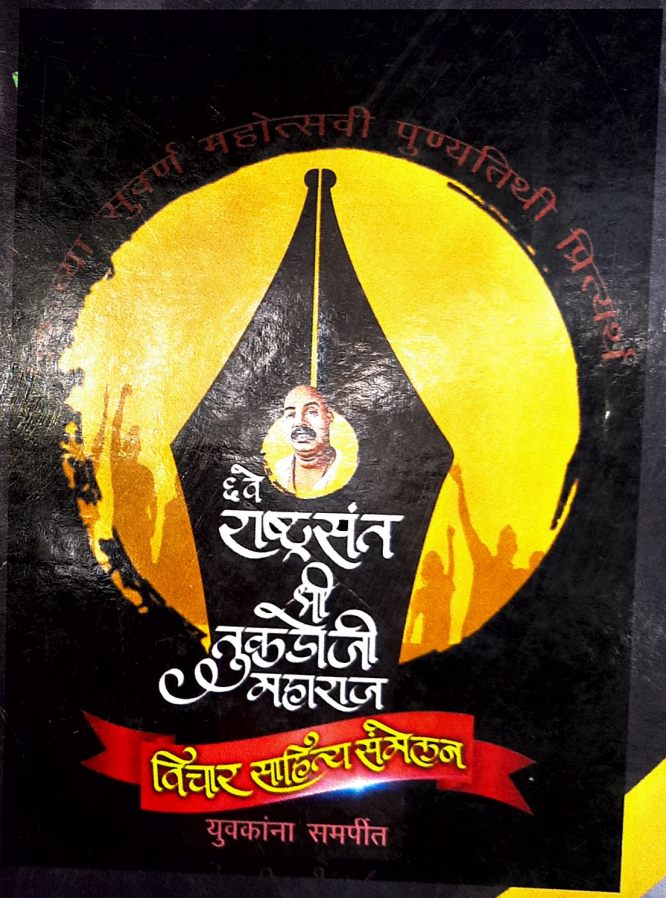

Volume - IX, Issue - I
January - March - 2020
Hindi / English

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१४	वंदनीय राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज के ग्रामगीता में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना **डॉ. निभा शांतीलाल उपाध्याय**	५३-५७
१५	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का मानवतावाद **प्रा. मोहन भगवान बल्लाल**	५८-६०
१६	संत तुकडोजी साहित्य दलित चेतना **डॉ. आनंद बक्षी**	६१-६२

१६. संत तुकडोजी साहित्य दलित चेतना

डॉ. आनंद बक्षी
सहा. प्राध्यापक, कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, चिखलदरा.

भारत देश जिसे विश्वगुरु कहा जातां था व वृषी मुनी उवं संतो के महान कार्या के लिए पहचाना जाता है। अलग अलग राज्यो में अनेक संतो ने अपने कर्मो से अपनी अलग पहचान बनाई है। उसी तरह महाराष्ट्र की धरा भी संतों के पावन कर्मों से प्रसिद्ध रही है। महाराष्ट्र राज्यो ने और यहा के संतों ने उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच सेतु का कार्य किया है। महाराष्ट्र अनेक संतो ने अपने कर्मो से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनोने भक्ती के मूल तत्वो को अपना कर पुरे भारत भक्ती का प्रचार प्रसार किया हे। महाराष्ट्र के संतों मे प्रमुखता से ज्ञानेश्वर, तुकाराम, रामदास, तुकडोजी महाराज, संत गाडगे बाबा, आदी प्रमुख है। इसी महान परंपरा म`अब संत तुकडोजी ने अपने सत्कर्मोद्वारा समाज नवचैतन्य तथा कैल्प्ती अनिष्ठ रुढीया उच–नीच, जात–पात जैसे समाजघातक रुढीयो का विरोध कर समाज को जागृत तथा उसे एक सुत्र मे बांधणे का कार्य किया है।

म्हाराष्ट्र की भूमी ने महानुभावों को जन्म दिया है। जिनमे लोकमान्य टिळक, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, डॉ. पंजाबराव देशमुख, कर्मोयोगी संत गाडगे बाबा, राष्ट्रसंत तुकडोजी आदी प्रमुख है। इन्होने बिखरते समाज को एक करने का, समाज की दुरीयो को मिटाने का कार्य किया है। यह कार्य केवल महाराष्ट्र तक सीमीत न होकर समुचे भारत देश मे इस तरह के आंदोलन चले । उच्च वर्णीयो मे जन्म लेने से कोई उचे कुल नही होता और शुद्र जातीने मे जन्म लेने से काई शुद्र नही कहलाता यह बताने साहस तुकडोजीने किया है। धर्म की, कर्म की दुहाई देने वाले को तुकडोजी फटकारते हुये कहते है की–

" धर्म बडा अभिमान। परंतू धर्मबंधुओ को नही स्थान ।
कुत्ते बिल्लीयो इतना भी प्रेम । नही देते ये धर्म लड ।
मानव छुतेही कहे पाप। उनको देखतेही संताप ।
विधर्म अपनातेही कहे बाप । ऐसा बर्ताव उन्हीका ।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध मंदिरोमे से एक मंदिर पंढरपूर का विठ्ठल मंदिर उस मंदिर मे दलितो का प्रवेश निषेध किया गया था। दलितोको मंदिरोमे प्रवेश नही था। जिसके लिए तुकडोजी महाराजने प्राणांतक उनशन किया । जिसके बाद करिब करिब 52 मंदिरोके दरवाजे दलितो के दर्शन हेतू खोल दिये गए। तुकडोजी यह संकल्प लिया था की, " जिस मंदिर मे दलितो को प्रवेश नही वहा मै भी नही जाउंगा।" उन्होने यही संकल्प किया था की, दलितो का उद्धार हो।

" दूर गये हरिजन अपने पास बुलालो रे।
पस बुलालो, पास बुलालो, गले मिलालो रे।
सब मिल कर दिल साफ करो, भारत को आजाद करो।"

दलितो को अत्त्याचार इतने बढ गए थे की, उनका रास्ता अलग, बस्ती अलग, कुआ भी अलग कभी–कभी तो उन्हे अपनी जाती बताने का भी डर लगता था। पर तुकडोजीने इन्ही भटके हुए लोगोके दिल मे अपने जाती का अभिमान जगाया था।

तुकडोजी कहते

"हरिजन हरी समान है। कुछ उनमे भेद नही।

जिनके मन पाप बसे, वे जन दूर है हरीसे।

ना रहे हरि के घर जात एक जातन की बात एक साथ जो कहे।

जिनके मन भेद वरे, सो अपना भेद धरे।

यह गुमान है।" .

इस तरह दलितोको न्याय दिलाने की, कोरी बातेही तुकडोजी ने नही की बल्की उसके लिए आंदोलन, अनशन जैसे मार्ग का उपयोग करके तत्कालीन सरकार को, समाज को झुकने के लिए मजबुर किया था।

तुकडोजी का ' तुकडोजी का गुरुदेव सेवा मंडळ एकमात्र मंडळ है। जिसमे सभी जाती, धर्म के लोक है। जाती–भेद को मिटाने का एक और उपाय उन्होंने खोज निकाला था। वह था 'सहभोजन'-उन्होने सहभोजन पर जोर दिया। ताकी सभी जाती, धर्म, पंथ के लोग एक साथ भोजन कर सकें और छुआ–छुत खत्म हो सके।

संदर्भ

1. ग्रामगीताः– रघनाथ कळवेः पुंडलिक शंकरराव लोंढे अध्यक्ष ग्रामगीता समिती प्रकाशन समितीद्वारा प्रिंटर्स ट्रेडींग कंपनी महल नागपूर, 2 पृ. 265
2. ग्रामगीताः– रघनाथ कळवेः पुंडलिक शंकरराव लोंढे अध्यक्ष ग्रामगीता समिती प्रकाशन समितीद्वारा प्रिंटर्स ट्रेडींग कंपनी महल नागपूर, 2 पृ. 266
3. अनुभव प्रकाश भजनावली–राष्ट्रसंत तुकडोजी, पृ.18